इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल I- प्राचीन इतिहास)

DTVF/18–OPS-H1

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Mintu Lal Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 01 / 18/7/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): Hindi

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

नोटः प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

MARKS: 80.5 /250

- Introduction: D
- Context: B
- Content: B
- Structure: C
- Current Link / Examples: C
- Conclusion: B
- Language: C

Singh

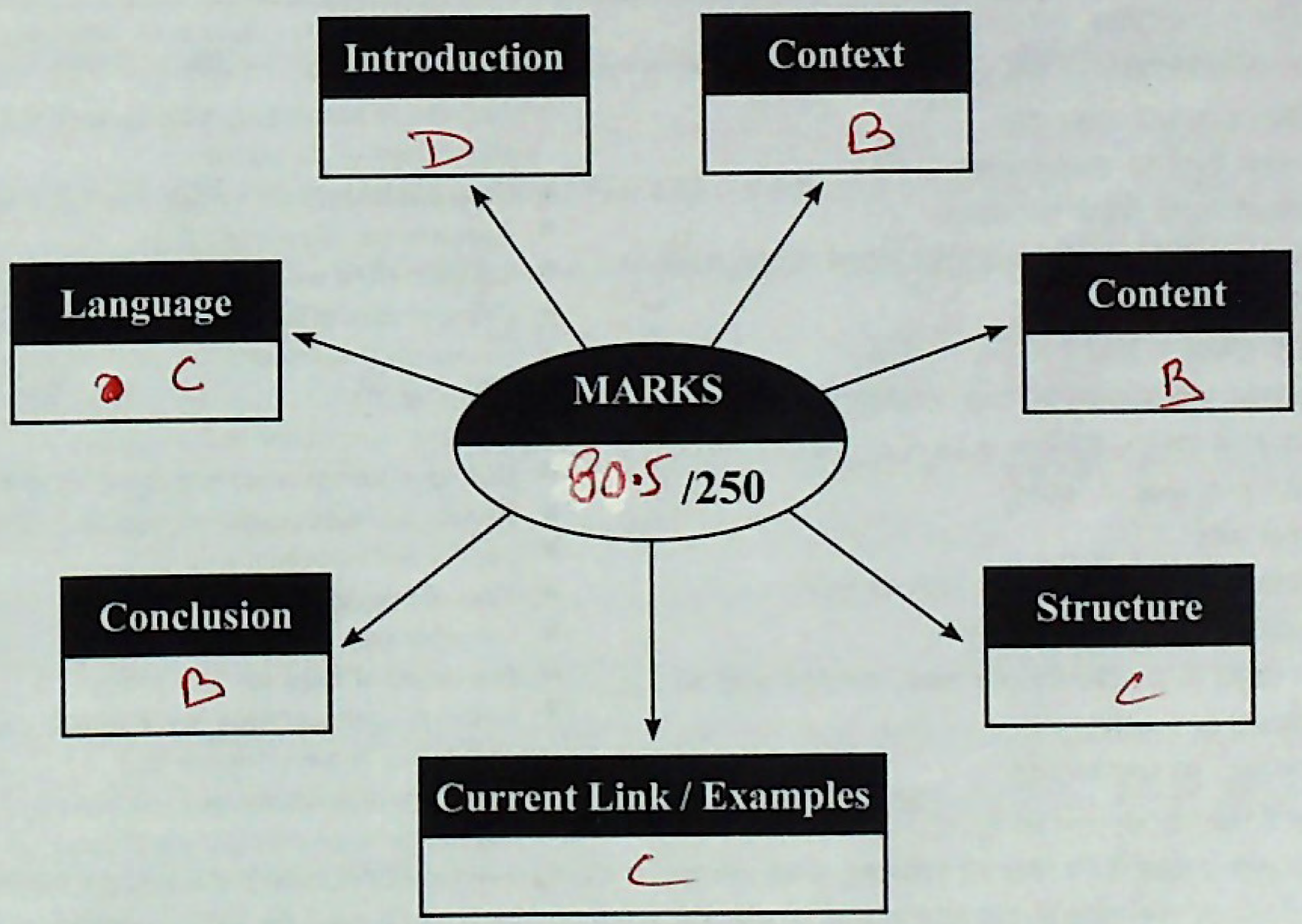

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

Anand Shukla

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - A / SECTION - A

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ नं. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं: $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

Identify the following places marked on the map supplied to you (on page no. 5) and write a short note of about 30 words on each of them in your Question-cum-Answer Booklet. Locational hints for each of the places marked on the map are given below seriatim: $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

(i) एक ताम्रपाषाण स्थल
A Chalcolithic Site

बालाथल

गिलुण्ड: यह वर्तमान में राजस्थान के राजसमन्द जिले में स्थित ताम्रपाषाणकालीन स्थल है। इसका कालक्रम 2100-1500 ई.पू. है। यहाँ से पकी हुई ईंटों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

0

(ii) एक मध्यपाषाणकालीन स्थल
A Mesolithic Site

लांघनाज: यह गुजरात के मेहसाणा जिले में स्थित एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से जंगली जानवरों की हड्डियाँ प्राप्त हुई है। यहीं पर ऐतिहासिक पिंपलेश्वर महादेव का मंदिर स्थित है।

2½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) एक नवपाषाणकालीन स्थल
A Neolithic site

पिकलीहल : यह वर्तमान में कर्नाटक के रायचूर जिले में अवस्थित है। यहाँ से राख के ढेर एवं नवपाषाणिक कब्रें प्राप्त हुई है। यहाँ से शैल चित्रकारी के भी साक्ष्य मिले हैं जिनमें सर्प, छिपकली एवं मानव आकृतियाँ प्रमुख है।

2½

(iv) एक प्राचीन राजधानी – श्रावस्ती : यह छठी शताब्दी ई.पू. में कोशल महाजनपद की राजधानी था। यह सहेट-महेट नाम से जानी जाती थी। यह वर्तमान में उत्तर प्रदेश जिले में अवस्थित है।
An ancient capital

~~: यह वर्तमान के हरियाणा के करनाल जिले में अवस्थित है। यहाँ पुष्यभूति वंश के शासकों ने अपनी सत्ता स्थापित की और अपनी राजधानी बनाई। इनमें सबसे प्रमुख हर्षवर्धन था। यह हिन्दू धर्म के अनुयायियों का भी पवित्र स्थान है।~~

इस समय कोशल का शासक प्रसेनजित था।

श्रावस्ती

0

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(v) एक हड़प्पाकालीन स्थल — कुन्तासी

A Harappan site

रोजड़ी: यह वर्तमान में गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित हड़प्पाकालीन स्थल है। यहाँ से जल निकास व्यवस्था के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ से गोदाम के साक्ष्य एवं कच्ची ईंटों के चबूतरे प्राप्त हुए हैं।

0

(vi) एक हड़प्पाकालीन स्थल — दौलतपुर

A Harappan site

सुरकोटड़ा: यह गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित हड़प्पाकालीन स्थल है। यहाँ से घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं। साथ ही इस स्थल से उन्नत वाणिज्यिक व्यापार की जानकारी प्राप्त होती है।

0

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(vii) एक धार्मिक नगर

A religious city

वाराणसी: यह उत्तरप्रदेश का एक जिला है। छठी शताब्दी ई.पू. में यह काशी महाजनपद की राजधानी था। यह वरुणा एवं असी नदियों के संगम पर स्थित है। यह हिन्दु अनुयायियों का एक प्रमुख तीर्थ स्थल है।

2½

(viii) एक प्राचीन बंदरगाह स्थल

An ancient port site

रिंडिस

मुजिरिस:

यह केरल के एर्नाकुलम जिले में अवस्थित है। यह प्राचीन भारत का पश्चिम तट पर स्थित महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। यहाँ से रोम के लिए सीधा व्यापारिक मार्ग था। प्लिनी के विवरण से भी इसकी जानकारी प्राप्त होती है।

0

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ix) एक अशोककालीन अभिलेख स्थल
An Ashoka's inscription site

मास्की:
यह वर्तमान में कर्नाटक के रायचूर जिले में अवस्थित है। जहाँ से अशोक का एक लघु शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें अशोक का नाम अशोक मिलता है। साथ ही यहाँ से पाषाणकालीन मृद्भाण्ड एवं उपकरण प्राप्त हुए हैं।

2½

(x) एक महाजनपदकालीन स्थल — माहिष्मती
A Mahajanapada period site

अवन्ति।
यह छठी शताब्दी ई.पू. के प्रमुख 16 महाजनपदों में से एक था। यह दो भागों में विभाजित था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिण भाग की महिष्मती थी। यह लोहे की खान होने के कारण एक शक्तिशाली महाजनपद था जिसने मगध को चुनौती दी। आगे चलकर शिशुनाग ने अवंति का मगध में विलय कर लिया।

0

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xi) एक बौद्ध स्तूप स्थल

A Buddhist Stupa site

?

0

(xii) एक गुप्तकालीन स्थल — भूमरा

A Gupta site

सिरपुर:

वर्तमान में यह छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिले में अवस्थित है। यहाँ से गुप्तकाल में निर्मित ईंटों का मन्दिर प्राप्त हुआ है जो लक्ष्मण मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

इसके अतिरिक्त यह बौद्ध एवं जैन धर्म से सम्बन्धित स्थल था क्योंकि यहाँ से बौद्ध एवं जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है।

0

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xiii) एक मौर्यकालीन स्थल — गुर्जरा
A Mauryan site

रूपनाथ:
वर्तमान में यह मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले में अवस्थित है। यहाँ से एक शिवलिंग प्राप्त हुआ है जिससे शैवधर्म के प्रचलन का पता चलता है। यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल भी था।

0

(xiv) एक उत्तर-मौर्यकालीन स्थल — चंद्रशाल
A later Mauryan site

अमरावती:
यह वर्तमान में आन्ध्रप्रदेश राज्य में स्थित है। यह सातवाहन शासकों की राजधानी थी। यह बौद्ध धर्म का भी प्रमुख केन्द्र था। यहाँ से प्राप्त स्तूप पर बुद्ध एवं बोधिसत्व के चित्रों को उभारदार शैली में चित्रण किया गया है।
वर्तमान में इसे आन्ध्रप्रदेश की राजधानी के रूप में विकसित किया जा रहा है।

0

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xv) एक प्राचीन राजधानी — हस्तिनापुर
An ancient capital

थानेश्वर : यह वर्तमान में हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले में अवस्थित है। यहाँ पुष्यभूति वंश के शासकों ने सत्ता स्थापित की और हर्षवर्धन ने इसे अपनी राजधानी बनाया।

यह हिन्दू धर्म के लोगों का प्रमुख पवित्र स्थान भी है।

0

(xvi) एक गुप्तकालीन स्थल — भीलसा
A Gupta Site

नाचनाकुठार :

यह वर्तमान में मध्यप्रदेश के पन्ना जिले में स्थित है यहाँ से गुप्तकाल में निर्मित पार्वती मंदिर स्थित है जो नागर शैली में निर्मित है। परवर्ती काल में यहाँ से एक शिव मंदिर भी प्राप्त हुआ है।

0

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक चित्रित धूसर मृदभांड स्थल — बुरकारी
A painted gray ware site

भगवानपुरा :
यह वर्तमान में हरियाणा राज्य के कुरुक्षेत्र जिले में अवस्थित है जहाँ से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड के साथ-साथ परवर्ती हड़प्पा काल के मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं। इससे पता चलता है कि आर्य एवं परवर्ती हड़प्पाकाल के लोग साथ रहते थे। इसका कालक्रम 1600-1000 ई.पू. माना जाता है।

0

(xviii) एक बौद्धकालीन स्थल — कपिलवस्तु
A Budhist site

लुम्बिनी :
यह नेपाल में स्थित बौद्ध धर्म से सम्बन्धित स्थल है। सम्राट अशोक ने अपने शासन के 20वें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की और 'बलि' नामक कर माफ कर दिया और 'भाग' (करभाग) 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया। साथ ही यह महात्मा बुद्ध का जन्म स्थल भी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(xix) एक बंदरगाह
A port

मिदनापुर

ताम्रलिप्ति :

यह वर्तमान प. बंगाल के तामलुक जिले के ~~मिदनापुर~~ में स्थित है। यह प्राचीन भारत का पूर्वी तट पर स्थित सर्वाधिक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। जहाँ से श्रीलंका, दक्षि. एशिया एवं चीन के साथ व्यापार होता था।

2

(xx) एक चालुक्यकालीन स्थल — पट्टदकल
A Chalukyan site

वातापी :

यह वर्तमान में कर्नाटक के बागलकोट के जिले में स्थित है। यह चालुक्य शासकों की राजधानी थी।

वातापी चालुक्यकालीन वास्तुकला का भी प्रमुख केन्द्र था। जहाँ पर्वत को काटकर गुफा मंदिरों का निर्माण किया गया है जिनमें तीन ब्राह्मण एवं एक जैन धर्म से सम्बन्धित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (a) अठारहवीं से बीसवीं शताब्दी के दौरान विकसित भारतीय इतिहास लेखन की प्राच्यवादी, उपयोगितावादी तथा राष्ट्रवादी विचारधारा का तार्किक विश्लेषण कीजिये। 20

Logically analyze the oriental, utilitarian and nationalist ideology in Indian Historiography developed during eighteenth to twentieth century. 20

?

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

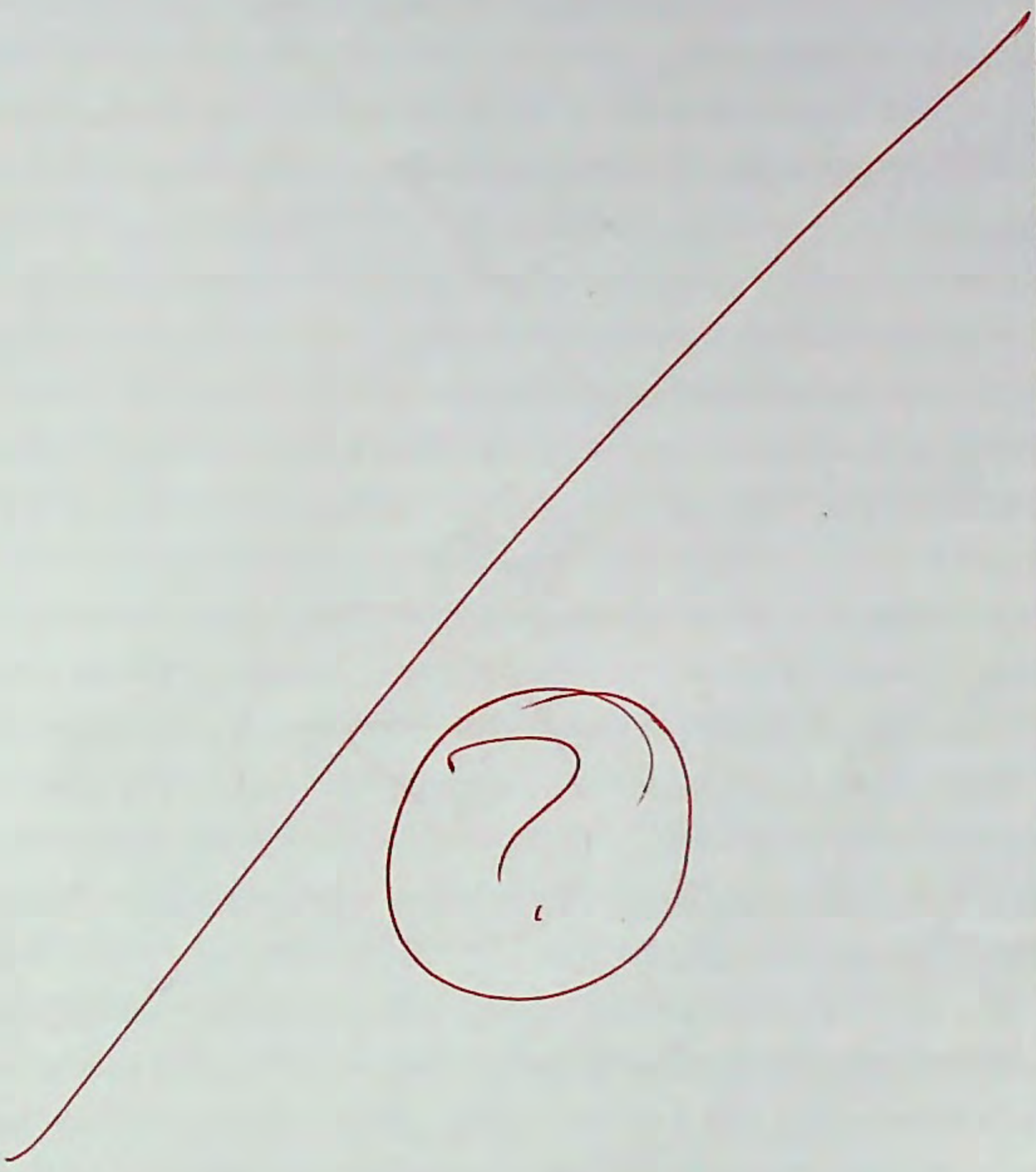

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) छठी सदी ई.पू. में धार्मिक अशांति की जड़ें आर्थिक अशांति में निहित थीं। विश्लेषण कीजिये। 20

The religious unrest in 6th AD was rooted in the economic unrest. Analyze. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छठी शताब्दी ई.पू. का काल भारत में धार्मिक पुनर्जागरण का काल था। इस काल में धार्मिक शांति या अशांति के न केवल आर्थिक अशांति ही कारक, सामाजिक एवं धार्मिक कारण भी थे।

* भूमिका को और स्पष्ट करें!

आर्थिक कारण:

छठी शताब्दी ई.पू. में कृषि मुख्य व्यवसाय हो गया और कृषि में लोहे का व्यापक प्रयोग होने लगा। अत: कृषि योग्य भूमि का विस्तार हुआ और लोहे के हलों को खींचने हेतु अत्यधिक पशुओं का प्रयोग किया जाने लगा।

मार्जिन का ध्यान रखें।

काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा जुताई का उल्लेख मिलता है। परन्तु इस काल में यज्ञ एवं बलि के प्रचलन के कारण पशुओं की अत्यधिक बलि दी जा रही थी।

चूंकि, कृषि के विकास के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया पशुधन का संरक्षण आवश्यक था और यह तत्कालीन धार्मिक कर्मकांडी व्यवस्था में संभव नहीं था। इसी कारण बौद्ध एवं जैन धर्म में अहिंसा का सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया और उपनिषदों में भी पशुबलि की निन्दा की गई है।

इसी तरह प्राचीन धर्मसूत्र नगरीय जीवन को घृणा की दृष्टि से देखते थे। साथ ही ऋण पर ब्याज लेना भी पाप माना जाता था किंतु इन नवीन धर्मों ने नगरीय जीवन को स्वीकृति प्रदान किया और अपने प्रचार का केन्द्र नगरों को बनाया। साथ ही इन्होंने सूदखोरी, व्यापार-वाणिज्य इत्यादि को समर्थन दिया।

आर्थिक कारण के अतिरिक्त सामाजिक कारण निम्न है-

सामाजिक कारण:

इस काल तक आते-आते वर्ण-व्यवस्था का स्वरूप अत्यधिक जटिल

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो गया और सामाजिक वातावरण तनावपूर्ण हो गया। इस काल में ब्राह्मण एवं क्षत्रियों के मध्य वर्णव्यवस्था में प्रथम स्थान को लेकर तनाव था तो वहीं वैश्य अपनी सामाजिक स्थिति से संतुष्ट नहीं थे। साथ ही शूद्र भी तत्कालीन व्यवस्था में परिवर्तन चाहते थे। इस तरह समाज के सभी वर्ग परिवर्तन चाहते थे। फलत: नवीन धर्मों का उदय हुआ।

<u>धार्मिक कारण</u>: → ऋग्वैदिक कालीन धर्म के सरल स्वरूप ने उत्तरवैदिक काल में जटिल स्वरूप ग्रहण कर लिया। इस काल में धार्मिक कर्मकांड, आडम्बर एवं पुरोहितों के प्रभुत्व को बढ़ावा दिया।

साथ ही <u>उपनिषदों जैसी नवीन विचारधाराओं</u> ने भी नये धर्मों के उदय को प्रोत्साहित किया। यहाँ यज्ञ एवं बलि की जगह ज्ञान पर बल दिया गया।

* छठी सदी ईसा पूर्व में ब्राह्मण धर्म में व्याप्त विसंगतियों के आलोक में बौद्ध एवं [illegible] के उद्भव का प्रसंग में आलोक करें साथ ही यह स्पष्ट करें कि इन धर्मों का उदय ब्राह्मण धर्म की अपेक्षा तात्कालिक आर्थिक व्यवस्था में निहित था

8.25

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) जैन व बौद्ध दर्शन ने किस प्रकार नैतिक जीवन के उत्थान में अपनी भूमिका का निर्वाह किया? विवेचना कीजिये। 15

How did the Jain and Buddhist philosophy play a role in the uplift of the moral life? Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

* भूमिका को और प्रभावी बनाएँ!

छठी शताब्दी ई.पू. का काल आर्थिक दृष्टि से समृद्धि का काल था। आर्थिक समृद्धि के कारण इस काल में नगरीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ और भौतिकवाद को बढ़ावा मिला। अतः ऐसी परिस्थितियों में बौद्ध एवं जैन दर्शन ने नैतिक जीवन के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस काल के दोनों ही धर्मों ने धार्मिक कर्मकांड एवं आडम्बरों तथा यज्ञ एवं पशुबलि का विरोध किया तथा अहिंसा के सिद्धांत को प्रस्तुत कर जनसामान्य के नैतिक जीवन के उत्थान में भूमिका निभाई।

दोनों ही धर्मों ने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य जैसे सिद्धांतों का प्रचलन किया और

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर कर नैतिक जीवन के उत्थान में योगदान दिया।

बौद्ध एवं जैन दोनों धर्मों ने जीवन का अंतिम लक्ष्य निर्वाण या मोक्ष की प्राप्ति माना और इस स्वरूप में लोगों द्वारा अच्छे कार्य किये जाने पर बल दिया। फलतः नैतिक उत्थान को प्रोत्साहन मिला।

इसी तरह दोनों धर्मों ने नगरीकरण के दौर में भौतिकवाद का विरोध किया और संयम एवं तप का मार्ग प्रदान किया ताकि लोगों का नैतिक उत्थान हो सके।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नगरीकरण एवं भौतिकवाद के दौर में जैन एवं बौद्ध धर्म ने नैतिक जीवन के उत्थान में व्यापक योगदान दिया।

* कृपया तथ्यों को और स्पष्ट करें!

* बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग तथा जैन धर्म के अणुव्रतों की चर्चा करते हुए लिखें!

* अष्टांगिक मार्ग आदि का भी उल्लेख करें!

3.75

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'स्त्रियों की दशा किसी भी देश की संस्कृति का मानदंड माना जाता है।' कथन के आधार पर वैदिककालीन तथा उत्तर-वैदिककालीन स्त्रियों की स्थिति का चित्रण प्रस्तुत कीजिये। 15

'The condition of women is considered to be the parameter for the culture of any country.' On the basis of the statement, depict the condition of women during the Vedic and Later Vedic period. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

*कृपया सटीक शब्दों का प्रयोग करें!

वैदिककाल स्त्रियों की स्थिति की दृष्टि से एक आदर्श समाज माना जाता है। इस काल में स्त्रियों की स्थिति बेहतर थी। स्त्रियों को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार था। ऋग्वेद में घोषा, सिकता, अपाला एवं विश्ववारा जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है।

इसी तरह स्त्रियों को सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के प्रमाण भी मिलते है। महिलाएँ सभा एवं समितियों की बैठकों में भाग लेती थी। इस दृष्टि से शासन एवं प्रशासन में लैंगिक समानता थी।

उत्तरवैदिक

~~वैदिक~~ काल में स्त्रियों से सम्बन्धित विभिन्न बुराइयाँ जैसे- बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा प्रथा का प्रचलन नहीं था और विधवा पुनर्विवाह होता था जिसे नियोग प्रथा के नाम से जाना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाता था।

इसी तरह महिलाओं का उपनयन संस्कार होता था। महिलाओं को जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता थी। इस दृष्टि से ऋग्वैदिक काल एक आदर्श काल था।

उत्तरवैदिक काल में महिलाओं की स्थिति:-

उत्तरवैदिक काल मे महिलाओं की अवस्थाओं में गिरावट हुई। इस काल में महिलाओं के उपनयन संस्कार को समाप्त कर दिया गया और महिलाएँ पूर्णतः पुरुषों के अधीन कर दी गई। इस काल में महिलाओं को शिक्षा से वंचित कर दिया गया।

साथ ही महिलाओं से सम्बन्धित विभिन्न प्रथाओं का प्रचलन जैसे- बाल विवाह, विधवा प्रथा, पर्दा प्रथा का हुआ।

इस काल में महिलाओं की दयनीय स्थिति की पुष्टि विभिन्न स्रोतों से भी होती है -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्र को परिवार का रक्षक एवं पुत्री के जन्म को दुःख का कारण बताया गया है।

→ मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों को शराब एवं जुए के समान मानकर दुर्गुणों की श्रेणी में रखा गया है।

→ याज्ञवल्क्य स्मृति में याज्ञवल्क्य द्वारा गार्गी का। सिर फोड़ देने का उल्लेख मिलता है जो स्त्रियों की निम्न एवं दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

~~निष्कर्ष रूप में~~ कहा जा सकता है कि ऋग्वैदिक समाज महिलाओं के लिए एक आदर्श समाज था जो उत्तरवैदिक काल में नहीं रहा और महिलाओं की स्थिति लगातार दयनीय होती चली गई।

* उत्तरवैदिक काल में महिलाओं की दशा में अवनति के कारणों का उल्लेख करें!

* व्यवस्थित, क्रमबद्ध, सुसंगठित एवं संगठित लेखन का प्रयास करें!

3.25

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following questions in about 150 words each:

(a) शुंगकालीन कला के माध्यम से धार्मिक जीवन के साथ-साथ लौकिक जीवन के संदर्भ में भी ज्ञान प्राप्त होता है। व्याख्या कीजिये।

The art during the Shunga dynasty gives knowledge about the people's life along with the religious life. Explain.

शुंगकाल में स्थापत्यकला, चित्रकला एवं ललितकलाओं का पर्याप्त विकास हुआ।

इस काल में स्थापत्यकला के अन्तर्गत स्तूप स्थापत्य का सर्वाधिक विकास हुआ। शुंग शासकों ने साँची एवं भरहुत के स्तूपों का निर्माण करवाया।

यहाँ पर स्तूप स्थापत्य बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। इन स्तूपों पर बुद्ध के जन्म, जीवन एवं महापरिनिर्वाण से सम्बन्धित कथानकों का अंकन किया गया है।

साथ ही इन स्तूपों पर प्राकृतिक दृश्यों का अंकन भी मिलता है

- कुछ उदाहरणों की चर्चा करते हुए कला में धार्मिक एवं लौकिक तत्व को दर्शाएँ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिनमें पशु-पक्षी, फूल-पत्ती इत्यादि प्रमुख हैं।
इस प्रकार स्तूप स्थापत्य से
धार्मिक जीवन के साथ लौकिक जीवन
के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त होता है। *अवधारणा स्पष्ट है।

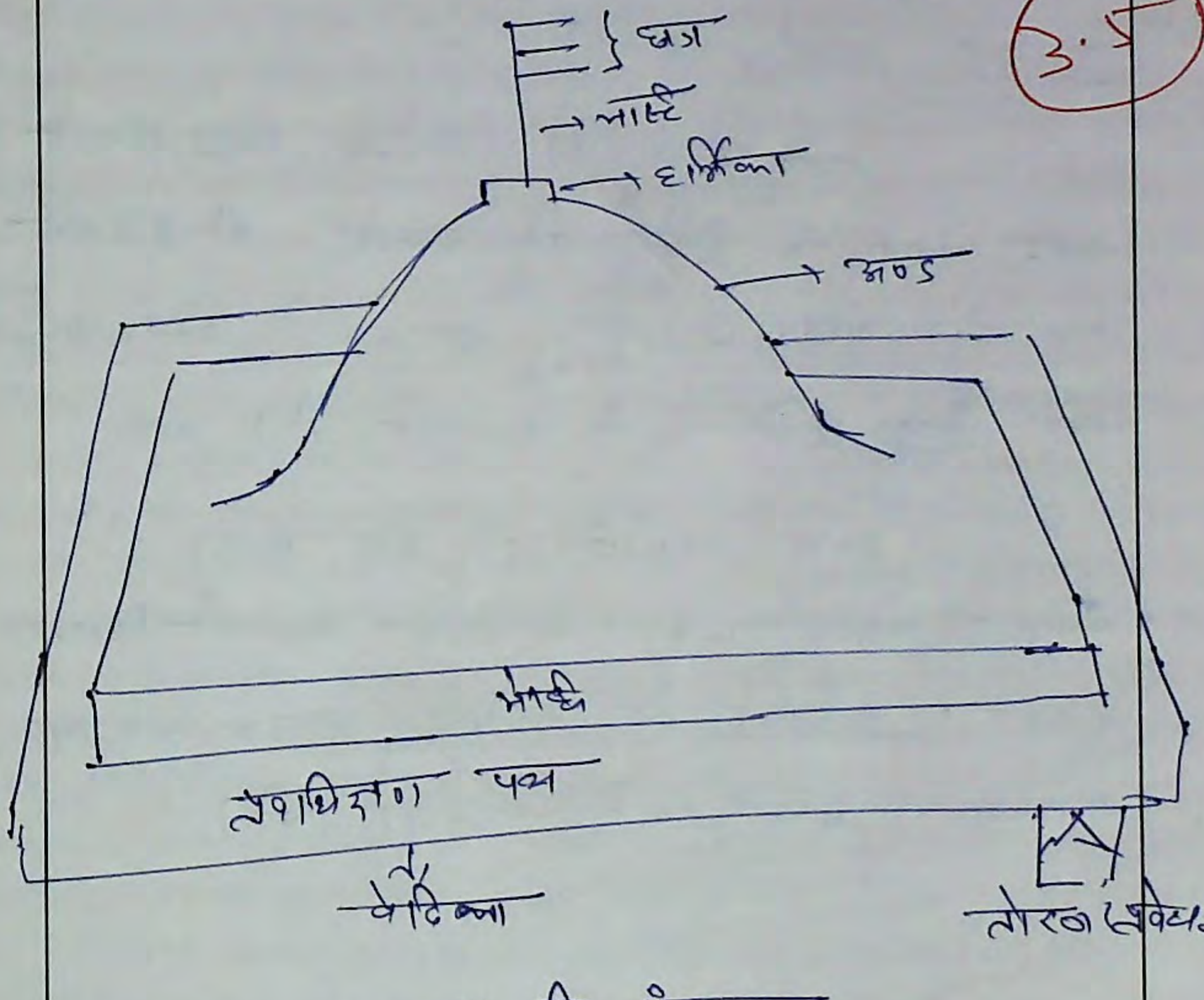

Good.

3.5

चित्र : स्तूप की संरचना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) सातवाहनकालीन भाषा व साहित्य के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये।

Present an outline of the development of language and literature during the Satavahana period.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सातवाहन काल में प्राकृत भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ। सातवाहनों की राजभाषा भी प्राकृत थी। अतः सातवाहन शासकों ने प्राकृत भाषा को संरक्षण प्रदान किया।

* तथ्यों को और स्पष्ट करते हुए लिखें!

* शब्द सीमा का पालन करें!

इस काल में अनेक विद्वानों ने प्राकृत भाषा के ग्रंथों की रचना की। इसमें हाल ने गाथासप्तशती, गुणाढ्य ने बृहत कथामंजरी जैसे ग्रंथों की रचना की।

इसके अतिरिक्त इस काल में संस्कृत भाषा एवं साहित्य का भी विकास हुआ। सर्ववर्मा ने कातंत्र नामक संस्कृत व्याकरण ग्रंथ की रचना की।

2½

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) मौर्योत्तरकालीन ब्राह्मणवादी धर्म के स्वरूप में हुए परिवर्तन को स्पष्ट कीजिये।

Elucidate the change in the Brahminical religion during the Mauryan period.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मौर्योत्तरकाल में भारतीय धर्मों के स्वरूप में संरचनात्मक परिवर्तन हुए और ये परिवर्तन ही भारतीय धर्म एवं समाज के मुख्य लक्षण बन गए।

इस काल में ब्राह्मण धर्म में अनुष्ठान पद्धति की बजाय पर भक्ति पर बल दिया जाने लगा और यह मोक्ष प्राप्ति का एक सरल मार्ग बन गया।

इसी तरह इस काल में त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की अवधारणा का विकास हुआ। विष्णु एवं शिव में से कौन बड़ा है। इस बात को लेकर अनुयायियों में मतभेद उत्पन्न हुए और वैष्णव एवं शैव सम्प्रदायों का विकास हुआ।

वैष्णव सम्प्रदाय:

वैष्णव सम्प्रदाय का विकास भागवत धर्म के रूप में हुआ। इसका प्रारंभ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वैदिक वेस्स वासुदेव कृष्ण से हुआ। इसमें हरि को सर्वोच्च माना माना है। विदेशी शासकों ने भी वैष्णव पंथ को संरक्षण प्रदान किया। इस काल में हेलियोडोरस ने वैष्णव धर्म के सम्मान में गरुड़ स्तम्भ की स्थापना की।

शैव सम्प्रदाय:

इस काल में शिवलिंग की पूजा प्रारंभ हुई।

इसी तरह इस काल में ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ। यज्ञ का तत्काल पुनः प्रारम्भ हुआ। पुष्यमित्र शुंग द्वारा अश्वमेध यज्ञ किये जाने का उल्लेख धनदेव के अयोध्या अभिलेख से प्राप्त होता है।

निष्कर्ष इस प्रकार इस काल में ब्राह्मण धर्म में हुए परिवर्तन परवर्तीकाल के हिन्दू धर्म की मुख्य विशेषता बन गए।

3.75

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

* ब्राह्मणवादी धर्म में स्थानीय देवताओं को भी ब्राह्मणीकरण हुआ।
* वैदिक देवताओं को ब्राह्मणवादी धर्म में गौण हुए तथ्यों का उल्लेख करते हुए लिखें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) गुप्तकालीन दस्तकारी उद्योग पर संक्षिप्त लेख प्रस्तुत कीजिये।

Write a short note on handicrafts during Gupta period.

गुप्तकाल में कृषि अधिशेष के कारण गैर-कृषि कार्यों को बढ़ावा मिला और विभिन्न प्रकार के शिल्पों एवं उद्योग धन्धों का विकास हुआ। यह श्रम के विभाजन एवं विशेषीकरण से युक्त था।

वस्त्र उद्योग इस काल का प्रमुख उद्योग था। मथुरा, उज्जैन एवं वाराणसी वस्त्र उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे। मथुरा का शाटक इस काल में प्रमुख वस्त्र के रूप में माना जाता था।

इसी तरह इसकाल में धातु उद्योग भी विकसित अवस्था में था। ~~इसमें~~ सर्वाधिक मुख्य लौह-इस्पात उद्योग थे। लौह धातु से कृषि उपकरण, शस्त्र एवं अनेक प्रकार के बर्तनों का निर्माण किया जाता था। ~~गुप्तकाल~~

गुप्तकालीन लौह प्रौद्योगिकी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण महरौली स्तम्भ
है जिस पर पिछले 1600 वर्षों से
जंग नहीं लगा है। यह प्राचीन
भारतीयों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का
उत्कृष्ट उदाहरण है।

इसके अतिरिक्त इस काल में
सिलाई, हैंडलूम, चमड़ा उद्योग भी
विकसित अवस्था में था। इन क्षेत्रों
के कारण व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा
मिला और यह प्रारंभिक गुप्तकाल
की प्रमुख विशेषता है।

* गुप्तकाल के अभिलेखों में उत्कृष्ट कोटि के अभ्यासों का भी उल्लेख करें!

3

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) 'ह्वेनसांग के विवरण से हर्षकालीन समाज व संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होता है।' विश्लेषण कीजिये।

'The account of Hsuan Thsang gives knowledge on the society and culture during the period of Harsha.' Analyze.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ह्वेनसांग चीनी यात्री था जो सम्राट हर्ष के समय बौद्ध प्रतिलिपियों को प्राप्त करने एवं बौद्ध धर्म से सम्बन्धित स्थलों की यात्रा के लिए 629 ई. में भारत आया था।

ह्वेनसांग ने अपना विवरण सी-यू-की नाम से लिखा जिसमें हर्षकालीन समाज एवं संस्कृति का व्यापक विवरण प्राप्त होता है।

ह्वेनसांग के अनुसार भारतीय समाज चार वर्णों में विभाजित थे। प्रत्येक वर्ण के अपने-अपने कार्य निर्धारित थे। साथ ही समाज में अस्पृश्यता की भावना विद्यमान थी।

ह्वेनसांग के अनुसार भारतीय लहसुन एवं प्याज खाते थे। साथ ही खाने के बाद पान एवं सुपारी खाने का प्रचलन था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ह्वेनसांग ने विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के चरित्र का वर्णन किया है उसने कश्मीर के लोगों को चालाक एवं धोखेबाज एवं मध्यदेश के लोगों को चरित्रवान, शीलवान एवं चरित्रवान कहा है। good

ह्वेनसांग के अनुसार इस समय बौद्ध धर्म का आतंक था। इस समय बौद्ध धर्म 18 सम्प्रदायों में विभाजित था। वाराणसी ब्राह्मण धर्म का प्रमुख केन्द्र था।

ह्वेनसांग ने इस भारत में शिक्षा का भी उल्लेख किया है। नालन्दा शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। सम्राट हर्ष ने नालन्दा को 100 गाँवों का राजस्व दान किया था।

इस प्रकार ह्वेनसांग के विवरण से तत्कालीन समाज एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होता है।

* अवधारणा स्पष्ट है।

5.5

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था के दौरान रोमन साम्राज्य से होने वाले विदेशी व्यापार तथा भुगतान संतुलन के संदर्भ में विश्लेषण कीजिये। 15

Analyze the foreign trade and Balance of Payments with Roman Empire in economy during post-Mauryan period. 15

मौर्योत्तरकाल विकसित व्यापार-वाणिज्य की दृष्टि से प्राचीन भारत में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस काल में भारत का दक्षिणी-पूर्वी एशिया, चीन एवं रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बेहतर अवस्था में थे।

रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक सम्बन्ध:

मौर्योत्तरकाल में रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक सम्बन्धों के साक्ष्य रोमन क्लासिक्स, प्लिनी की नेचुरल हिस्ट्री, पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी, एवं भारत में मिले रोमन सिक्के एवं बस्तियों से प्राप्त होते हैं। रोमन सम्राट ऑगस्टस एवं टीबेरियस के सिक्के भारत से प्राप्त हुए हैं।

मौर्योत्तरकाल में निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ हाथी दाँत से निर्मित सामग्री, मसालों,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोती, मसाले इत्यादि थे। वहीं प्रमुख आयात सामग्री में रोमन मदिरा, शीशे के बर्तन, रत्न एवं अरेटाइन मृदभाण्ड थे।

व्यापार संतुलन :

इस काल में भारतीय व्यापारियों द्वारा अत्यधिक मात्रा में वस्तुओं का निर्यात रोमन साम्राज्य को किया जाता था। जिसके कारण भारत को अत्यधिक सोने एवं चाँदी की प्राप्ति होती है। अतः यह व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था। प्लिनी के कथन से भी यह प्रमाणित होता है" प्रत्येक शताब्दी ई.पू. में भारतीय विलासिता की वस्तुओं के बदले रोम के स्वर्ण का बहिर्गमन भारत से हो रहा है।"

वहीं दूसरी तरफ भारतीय व्यापार रोम की नैतिकता का पतन कर रही थी। इस पर रोमन सीनेट ने भी चिंता व्यक्त की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस काल में भारत के पक्ष में व्यापार संतुलन एवं रोमन नैतिकता के पतन के कारण रोमन सीनेट ने भारतीय व्यापार को प्रतिबन्धित करने को कहा।

इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि मौर्योत्तरकाल के भारत एवं रोमन साम्राज्य के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध बेहतर थे एवं व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था। इसी कारण यह आर्थिक दृष्टि से स्वर्ण काल था।

Very Good

7

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'संगम साहित्य ईसा की आरंभिक शताब्दियों में सुदूर दक्षिण के समाज के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का साधन माना जाता है।' विश्लेषण कीजिये। 20

'Sangam literature is considered to be a medium of expressing the worldview of far south during the early centuries AD.' Analyze. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संगम साहित्य से दक्षिणी भारतीय सामाजिक जीवन के बारे में पता चलता है। इस समय दक्षिणी भारतीय समाज में आर्य सांस्कृतिक तत्वों का प्रवेश हो रहा था। संगम साहित्य में वर्णित दक्षिण भारतीय समाज की विशेषताएँ निम्न हैं-

संगमकालीन समाज 5 वर्गों में विभाजित था - पुरोहित (ब्राह्मण), अरसर (शासक वर्ग), वेल्लाल एवं वेल्लार (धनी एवं निर्धन किसान) तथा वणिगर (व्यापारी)

मणिमेखलै, शिलप्पादिकारम आदि में किस प्रकार वर्णित … को संदर्भित करते हुए उदाहरणों का प्रयोग करें

अरसर: इसका मुख्य कार्य शासन करना था। शासक वर्ग ललित कलाओं का संरक्षण देता था।

ब्राह्मण: ब्राह्मणों का मुख्य कार्य अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ जैसे धार्मिक कार्यों का संपादन करना था। इन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। ब्राह्मणों को शासकों द्वारा पुरस्कृत भी किया जाता था। चोल शासक करिकाल ने एक ब्राह्मण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को 16 लाख स्वर्ण मुद्राएँ दान में की।

वेल्लाल एवं वेल्लार: वेल्लाल का राजा की आधिभोग भूमि पर स्वामित्व होता था। इनका राजा के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होते थे और युद्ध एवं शिकार में राजा के साथ जाते थे।

वहीं वेल्लार निर्धन होते थे और वे वेल्लालों की भूमि पर कृषि कार्य करते थे। अतः इनकी स्थिति भूमिहीन कृषि मजदूर के समान थी।

वणिगर: यह व्यापारी वर्ग था जो आंतरिक एवं बाह्य व्यापार में संलग्न था। इनकी स्थिति वैश्यों की तरह सम्मानजनक नहीं थी।

दास प्रथा: संगम समाज में दास प्रथा का प्रचलन नहीं था। यह संगम समाज का मुख्य अभिलक्षण है।

स्त्रियों की दशा: संगम समाज में स्त्रियों की दशा सम्मानजनक थी। महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करती थी। कुछ महिलाएँ कवि, लेखक भी थी। जिनमें औवेयार एवं नच्चेलियार का नाम प्रमुख है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महिलाओं को जीवन साथी चुनने एवं कुशल विचार की स्वतन्त्रता थी। इस काल में नर्तकियों एवं गणिकाओं का भी अस्तित्व मिलता है। नर्तकियों को पातुर एवं विलासिनी कहा जाता था। [लज्जागौरी पूजा इस काल की प्रमुख शुरुआत थी जिससे मातृसत्तात्मक समाज पितृसत्तात्मक समाज की ओर अग्रसर दिखाई देता है।]

विवाह: विवाह जैसा एक संस्कार के रूप में स्थापित था। नौकाविलय(?) के द्वारा(?) प्रेम के विवाहों का पता चलता है। प्रेम विवाह को पंचमिनी(?) कहा जाता था।

सामान्य लोग सूती एवं ऊनी वस्त्र पहनते थे। साथ ही लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी थे। मुख्य भोजन चावल के साथ दूध था। खाने के बाद पेय पदार्थों में नारियल, ताड़ी एवं दूध निर्धन लोगों द्वारा तथा सोम मदिरा धनी लोगों द्वारा लिया जाता था।

मनोरंजन के साधनों में पासा खेलना, कुश्ती एवं नृत्य एवं संगीत थे। आखेट राजदरबार के मनोरंजन का साधन था।

अध्ययन पद्धतियों में वाद-विवाद एवं शास्त्रार्थ दोनों प्रचलित थी।

Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) 'मौर्योत्तरकालीन विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखने के लिये राजतंत्र में दैवी तत्त्वों को समाविष्ट करने की प्रवृत्ति अपनाई गई।' विवेचना कीजिये। 20

'The tendency to incorporate divine elements in monarchy was adopted to control the decentralization tendencies in post-Mauryan period.' Discuss critically. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) अजन्ता की गुफाओं में निर्मित चित्रों के माध्यम से भित्ति चित्रकला के तीन प्रमुख विषय अलंकरण, चित्रण तथा वर्णन को विश्लेषित कीजिये। 15

Analyze the three major themes of graffiti – decoration, depiction and description by the means of the Ajanta cave paintings. 15

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this s

अजन्ता की गुफाएँ भारतीय चित्रकला की अनुपम सम्पदा है। इन गुफाओं का निर्माण द्वितीय शताब्दी ई. पू. से प्रारम्भ होकर सातवीं शताब्दी तक विभिन्न कालों में विभिन्न शासकों द्वारा करवाया गया। इन्हें यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।

इन गुफाओं में चित्रकला का विकास अलंकरण, चित्रण एवं वर्णन के माध्यम से किया गया है जो निम्न प्रकार है -

अलंकरण: अलंकरण के अंतर्गत प्राकृतिक दृश्यों जैसे- फूल, पत्ती, पेड़-पौधे इत्यादि के माध्यम से अलंकरण किया गया है।

चित्रण: इसके अन्तर्गत व्यक्ति विशेष का चित्रण किया गया है। उदाहरण के लिए -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

[चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय को ईरानी सम्राट खुसरो के दूतमण्डल की अगवानी करते हुए दिखाया गया है।]

इसी तरह पद्मपाणि बोधिसत्व का चित्र भी उल्लेखनीय है जिसके अन्तर्गत पद्मपाणि के सिर पर मुकुट, कोमल शरीर अभय मुद्रा है एवं बाँये हाथ में पद्म पुष्प है तथा गले में सफेद मोतियों की माला दर्शाया गयी है।

वर्णन: इसके अन्तर्गत चित्रों के माध्यम से किसी कथानक का वर्णन किया जाता है। विशेषतया इसमें जातक कथाओं को अंकित किया जाता है जिसमें बुद्ध, एवं बोधिसत्व एवं बुद्ध के जन्म, जीवन एवं महापरिनिर्वाण से सम्बन्धित कथानकों का चित्रण किया गया है।

अजन्ता की गुफा 16, 17 एवं 19 इसके प्रमुख उदाहरण है जो गुप्तकालीन है। गुफा संख्या 16 में मरणासन्न राजकुमारी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

एवं महापरिनिर्वाण का चित्र उल्लेखनीय है। इसमें राजकुमारी के गृह पर करुणा एवं विलाप का भाव प्रदर्शित है।

इसी तरह गुफा संख्या 17 को चित्रशाला कहा गया है। इसमें बुद्ध के जन्म, जीवन एवं महापरिनिर्वाण से संबंधित चित्र है। इसी गुफा में माता एवं शिशु का चित्र भी उल्लेखनीय है।

इसके अतिरिक्त अजन्ता की चित्रकला में करुणा, विलाप, उल्लास, हर्ष, वैराग्य जैसी मानवीय भावनाओं का अद्वितीय प्रदर्शन किया गया है।

निष्कर्ष कहा जा सकता है कि अजन्ता के चित्रों ने भारतीय चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया और ये चित्र अलंकरण, वर्ण एवं चित्रण के माध्यम से अतीत गये।

Very Good.

7

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) गुप्तोत्तर काल में आर्थिक परिवर्तनों का प्रत्यक्ष परिणाम आंतरिक व बाह्य व्यापार का ह्रास था। विश्लेषण कीजिये। 15

The direct consequence of economic changes in the later Gupta period was the decline of the internal and external trade. Analyze. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुप्तोत्तर काल में आंतरिक एवं बाह्य व्यापार के ह्रास के प्रमुख कारण निम्नांकित -

आंतरिक व्यापार के ह्रास के कारण:

गुप्तोत्तर काल में भूमिदान प्रणाली के कारण सामन्तवाद का विकास हुआ। फलतः अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ अर्थात् राजनीतिक विकेन्द्रीकरण हुआ। ये सामन्त क्षेत्रीय विस्तार के लिए परस्पर संघर्षरत थे। फलतः आंतरिक व्यापार का ह्रास हुआ।

साथ ही इन सामन्तों ने अपने-अपने सिक्के जारी किये। फलतः एक मुद्रा के अभाव में मौद्रिक अर्थव्यवस्था का पतन हुआ और कौड़ियाँ विनिमय का माध्यम बन गयी तथा व्यापार-वाणिज्य का पतन हुआ। साथ ही आत्मनिर्भर स्थानीय उत्पादक इकाईयों का विकास हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाह्य व्यापार के ह्रास के कारण:

→ गुप्तोत्तर काल तक रोमन साम्राज्य का पतन हो चला हो गया जिसके कारण रोमन साम्राज्य एवं भारत के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध कमजोर हुए। यद्यपि इस समय पूर्वी रोमन साम्राज्य का बैजेन्टाइन साम्राज्य के भारत के व्यापारिक सम्बन्ध थे।

→ किंतु आगे चलकर बैजेन्टाइन साम्राज्य के लोगों ने चीन से रेशम निर्माण की कला सीख ली। अतः भारतीय रेशम की माँग कम हुई एवं व्यापार-वाणिज्य का पतन हुआ।

→ इसी तरह गुप्तोत्तर काल में भारत हूणों का आक्रमण हुआ। इसके कारण से पश्चिम एशिया एवं मध्य एशिया से स्थल मार्ग के माध्यम से होने वाला व्यापार बाधित हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

गुप्तोत्तर काल में आंतरिक एवं बाह्य व्यापार के ह्रास के कारण शिल्प एवं उद्योग-धंधों का ह्रास हुआ। अब शिल्पों की माँग नहीं रही। इसी कारण शिल्पकार शहरी केन्द्रों से गाँवों की ओर जाने लगे। फलतः शिल्पों का ग्रामीणीकरण हुआ। ~~इसी कारण~~

व्यापार-वाणिज्य के पतन के कारण भारत में सोने-चाँदी की मात्रा में कमी हुई। फलतः मौद्रिक अर्थव्यवस्था का पतन हुआ। इन सभी ~~सभी~~ का सम्मिलित परिणाम नगरों के पतन के रूप में दिखाई देता है। ह्वेनसांग ने इस समय कपिलवस्तु, पाटलिपुत्र एवं श्रावस्ती के पतन का उल्लेख किया है।

इस तरह गुप्तोत्तर काल व्यापार-वाणिज्य के ह्रास का काल था जिससे नगरों का भी पतन हुआ।

Very Good

7.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'एक जाति के रूप में कायस्थों का आविर्भाव महत्त्वपूर्ण सामाजिक घटना है।' कथन के संदर्भ में गुप्तोत्तरकालीन कायस्थ जाति के उद्भव एवं कार्यों का विश्लेषण कीजिये। 20

'The emergence of Kayasthas as a caste is an important social phenomenon.' Analyze the origin and functions of Kayastha caste in the post-Gupta period in the context of the statement. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुप्तकाल में ~~[illegible]~~ शासकों द्वारा तत्कालीन भारत में अनुदान दिया गया। इस अनुदान से संबंधित रिकॉर्ड को ~~रखने~~ के लिए करणिकों की नियुक्ति की जाती थी। ये करणिक आगे चलकर ~~एक~~ एक वर्ग में परिवर्तित हो गए।

फिर आगे चलकर इनके मध्य वैवाहिक सम्बन्ध, खान-पान के सम्बन्ध स्थापित हुए और यह वर्ग कायस्थ जाति के रूप में परिवर्तित हो गया। यह परिवर्तन गुप्तोत्तरकाल में दिखाई देता है।

चूँकि, कायस्थ जातियों के उद्भव से ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों को चुनौती मिली जिसके कारण समाज में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तनाव का वातावरण उत्पन्न हो गया।)
इस प्रकार गुप्तोत्तर काल में कायस्थों का उद्भव एक महत्वपूर्ण सामाजिक घटना थी।

कायस्थों के कार्य:

→ कायस्थों का मुख्य कार्य भूमि से संबंधित रिकॉर्ड को रखना होता था।

→ इसके अलावा व्यवस्था ग्राम प्रशासन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। ग्राम सभा के सदस्यों को भी लेखन एवं [illegible] कहा जाता था।

* तथ्यों को और स्पष्ट करते हुए लिखें!

(6)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

~~रफ कार्य के लिये स्थान~~

~~(Space for Rough Work)~~

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समग्र मूल्यांकन

(i). कन्टेन्ट ठीक है लेकिन इसमें और सुधार करें!
(ii). भूमिका को सशक्त रूप में लिखें।
(iii). मानचित्र का नियमित अभ्यास करें!
(iv). नियमित रूप से लेखन का अभ्यास करते रहें!

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation